दांगी समाज की गौरान्वित गाथा

दुनियाभर की संस्कृति को प्रभावित करने वाला दांगी जाती का इतिहास बहुत ही गौरवपूर्ण रहा है| प्रमाणों के आधार पर डांगी /दांगी जाती को पुराण कालीन दंडक जनपद का निवासी माना गया है | प्रारम्भिक काल में दंडक दंगवाल डांगी प्रधान थे| इसका सीमा क्षेत्र बहुत विस्तृत रहा है | मधय एशिया में दांगीस्तान में दंगयाना, पश्चिम भारत में काबुल कंधार और पेशावर, पंजाब का काठा प्रदेश, हिमांचल का नाहन प्रदेश, गुजरात का डांग, कुमाऊ गढ़वाल, उजैन, दांगीवाडा (सागर),विदिशा, मालवा, राजस्थान के झालवाड़ , बघेल, बुंदेलखंड, विन्द्याचल,बिहार के मगध गया,नवादा,जहनाबाद, औरंगाबाद ,वैशाली , पटना , जमुई , झारखण्ड के पलामू , गढ़वा , चतरा , हजारीबाग ,बोकारो , धनबाद, जमशेदपुर ,राँची , बंगाल, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक तथा तकील प्रान्त, मेबाढ़ तक विस्तार के क्षेत्र रहे है| दांगी कर्मवादी व्यस्था को अपनाते हैं इसलिए अपने कर्मों से हर जगह अलग श्रेणी में जाने जाते हैं. दांगी का स्वाभाव बड़ा ही मृदुभावी होता है. शांत स्वभाव ,शालीन व्यवहार, कार्य और जिमेवारी के प्रति गंभीर होते हैं. दांगी राजाओं के राज पाट भारत और नेपाल में प्रजा के हीत में रहा है. जिसकी गाथा आज भी गयी जाती है. दांगी अपने सभ्यता और संस्कृति के कारन भी अपने आप में अलग मने जाते हैं. कई इति हासकरों ने दांगी जाती पर अपने पुस्तक और लेख में जगह दी है, कई शोधार्थियों ने दांगी पर पीएचडी भी किया है, विश्व के पटल पर दांगी सभयता, मालवा सभयता एवं अन्य कई पहलुओं पर शोध जारी है. अधिक जानकारी के लिए अगले पेज पर जाएं।

सूर्य पुत्र राजा इक्ष्वाकु के सौ पुत्र थे, किन्तु उनमें तीन पुत्रों विकुक्षि, निमि एवं दण्डक के नाम पर क्षत्रियों के तीन मुख्य वंश परिचालित हुए। महाराजा इक्ष्वाकु ने अपने इन तीनों पुत्रों का राज्याभिषेक किया।ज्येष्ठ पुत्र विकुक्षि को अयोध्या का राजा बनाया जो ''सूर्यवंशी ''कहलाए। दूसरे पुत्र निमि को पूर्वी क्षेत्र का राजा बनाया जिसने अपने पुत्र मिथि के नाम पर मिथिलापुरी बसाया। राजा निमि को''विदेह''की पदवी थी, इस कारण इनके वंश ज''विदेह राजा'' कहलाए तीसरे पुत्र दण्डक को पश्चिम दिशा का राज्य दिया। राजा दण्डक ने अपने नाम पर ''दण्डकपुरी'' नाम का नगर बसा कर अपनी राजधानी बनाई। इस तरह विकुक्षि के नाम पर विकुक्षि-वंश या सूर्यवंश , निमि के नाम पर निमिवंश एवं दण्डक के नाम पर दण्ड वंश चला। इसके अतिरिक्त 97पुत्रों को इन्हीं तीन प्रतापी पुत्रों के अधीन राजा बनाकर राज करने को महाराज इक्ष्वाकु ने कहा सूर्यवंश की शाखाएं सूर्यवंश , दण्डकवंश (दाँगीवंश) रघुवंश , लव वंश और कुश वंश , पुष्कल वंश , अंग वंश , निकुंभ वंश , वल्ला वंश एवं शाक्य वंश है।

दाँगी जाति का इतिहास

भारत और नेपाल में अनेक अलग-अलग वंशो की जाती हैं जो दांगी, डांगी उपनाम का प्रयोग करते है। दांगी उपनाम तीन जातियों द्वारा प्रयोग किया जाता है |

दांगी उपनाम 4 अलग-अलग वंशो की जातियो द्वारा प्रयोग किया जाता है।

1. दांगी ठाकुर-दांगी ठाकुरो की उत्पत्ति राजा दूल्हेराय कछवाहा (11 वीं शताब्दी) के दूसरे बेटे देलन से कछवाहो की शाखा देलणपोत चली इसी में आगे राजा दंग हुए इन्ही के वंशज सूर्यवंशी कच्छवाह दांगी ठाकुर कहलाए ।

Copyright©2024 दाँगी संस्कृतिक विकास संघ

कछवाहो की 53 शाखाओं के गीत में इनका नाम है जहाँ लिखा "दांगी प्रधान", ये मध्यप्रदेश, व राजस्थान के कुछ जिलो में पाये जाते है [SOURCE:SHEKHAWAT AND THEIR TIME] 12 वीं शताब्दी में तुर्की के शासन आते ही, बड़े राजपूत साम्राज्य विखर गये, राजा दूल्हेराय के दूसरे बेटे देलन (1156/1160 ई०) ने ग्वालियर के पास अपना राज्य बसाया, इन्ही के कुछ पीढ़ी बाद राजा दंग हुये जिनका समय 1230 या 1250 माना गया है, इन्ही से दांगी राजपूतों की उत्पत्ति हुयी, इसकी पुष्टि दमोह के पास 1302ईसवी के शिलालेख से होती है जहाँ बाघदेव दांगी का जिक्र है, दांगी राजपूतों की जागीरे मुख्यतः गढ़पहरा और खुरई रही है इसके अलावा इनके नाम पर सागर जिले में दांगीवाड़ा भी है दांगीयो का पहला शिलालेख दमोह से 1302 ईसवी का मिला जिसमें बाघदेव दांगी की बात हुयी है, तथा इसके बाद का शिलालेख 1747 में दांगियो की गढ़पहरा रियासत में मिला जहाँ राजा उम्मेद सिंह दांगी की पत्नी के सती होने के बारे में लिखा है। दांगीयो के लिखित इतिहास के प्रमाण 16 वीं शताब्दी से मिलने शुरू होते है, हालांकि इससे पहले भी 13, 14 वीं शताब्दी में इनके कई शिलालेख मिले थे, औरंगजेब के समय ये सधर, दमोह, झांसी, ग्वालियर, ओरछा के पास छोटे जागीरी के जागीरदार थे, लेकिन महाराजा छत्रसाल के पुत्र ने इन्हें गढ़पहरा से निकाल दिया.. लेकिन इसके बाद इन्होंने आमेर से अपने कछवाहा भाई होने के नाते राज्य को वापस दिलवाने के लिए आग्रह किया जिसके बाद 1727 में सवाई जयसिंह ने इनकी मदद की व गढ़पहरा और खुरई की जागीरी वापस दी व इसके बाद मराठा के काल में भी ये अपने शासन क्षेत्र में राज करते रहे, राजा उम्मेद सिंह की पड़ोस के मुस्लिम जागीरदार के विरुद्ध लड़ाई के समय इनकी रानी का सती होना भी एक ऐतिहासिक उदाहरण है, दांगियो ने 1857 की क्रांति में भी अंग्रेजो के विरुद्ध भाग लिया था. जिनमें स्थानीय स्तर के दांगी राजपूत शामिल थे । [SOURCE:SAGAR DISTRICT GAZZETTER, ASI REPORT IN TOUR 1874- 75] दांगी कछवाहो की मुख्य विरासत गढ़पहरा के किले अलावा वहां का शीशमहल है जिसका निर्माण 16 वीं शताब्दी में उदनशाह दांगी के समय हुआ था, यहाँ आमेर के राजा सवाई जय सिंह भी रूके थे, गढ़पहरा का किला भी उतना ही ऐतिहासिक है जिसने कई उतार चढ़ाव देखे. इस जाती की गोत्र है -निबोनिया और भदोनिया और मेटोलिया, धमधमिया आदि। दांगी ठाकुरों की कुलदेवी माता जमवाय है।वंश-सूर्यवंश,राजवंश-कछवाह,वर्ण- क्षत्रिय है।

2. दांगी जाट - जाट जाती में एक दांगी नामक गोत्र है।दांगी जाटो का अन्य दांगी,डांगीयो से कोई संबंद्ध नहीं है। इस गोत्र के लोग पंजाब और हरियाणा में रहते है।
3. दांगी कोइरी,मौर्य,काछी (कुशवाहा)-3.दांगी कोइरी,मौर्य,काछी (कुशवाहा)-कच्छपघात राजवंश के राजा दंग के वंसज दांगी ठाकुरो के अलावा दांग अर्थात जंगल,घाटी,पठार पर रहने वालों को डांगी,दांगी कहते है अधिकांश बिहारऔर नेपाल के कोइरी,मौर्य,काछी इसी कारण डांगी,दांगी कहलाने लगे बाद मे कुशवाहा लिखने लगे।यह मेहता,वर्मा,सिंह आदी उपनामो को भी लगाते है। यह दांगी ठाकुरो से कोई सम्बंध नहीं रखते।इनका क्षत्रिय कछवाह ठाकुरो की 53 शाखा जिनमे क्षत्रिय ठाकुर दांगी भी शामिल है उनसे कोई भी विवाहिक एवं अन्य संबंद्ध नहीं होता होता ।और यह नेपाल तक फेले है।
4. दंडकवंशी दांगी(डांगी) -सूर्य पुत्र राजा इक्ष्वाकु के सौ पुत्र थे, किन्तु उनमें तीन पुत्रों विकुक्षि, निमि एवं दण्डक के नाम पर क्षत्रियों के तीन मुख्य वंश परिचालित हुए। महाराजा इक्ष्वाकु ने अपने इन तीनों पुत्रों का राज्याभिषेक किया।ज्येष्ठ पुत्र विकुक्षि को अयोध्या का राजा बनाया जो ''सूर्यवंशी ''कहलाए। दूसरे पुत्र निमि को पूर्वी क्षेत्र का राजा बनाया जिसने अपने पुत्र मिथि के नाम पर मिथिलापुरी बसाया। राजा निमि को''विदेह ''की पदवी थी, इस कारण इनके वंश ज''विदेह राजा'' कहलाए तीसरे पुत्र दण्डक को पश्चिम दिशा का राज्य दिया। राजा दण्डक ने अपने नाम पर ''दण्डकपुरी''नाम का नगर बसा कर अपनी राजधानी बनाई। इस तरह

Copyright©2024 दाँगी संस्कृतिक विकास संघ

विकुक्षि के नाम पर विकुक्षि-वंश या सूर्यवंश , निमि के नाम पर निमिवंश एवं दण्डक के नाम पर दण्ड वंश चला। इसके अतिरिक्त 97पुत्रों को इन्हीं तीन प्रतापी पुत्रों के अधीन राजा बनाकर राज करने को महाराज इक्ष्वाकु ने कहा सूर्यवंश की शाखाएं सूर्यवंश , दण्डकवंश (दाँगीवंश) रघुवंश , लव वंश और कुश वंश , पुष्कल वंश , अंग वंश , निकुंभ वंश , वल्ला वंश एवं शाक्य वंश है।

डांगी उपनाम 3 अलग-अलग वंशो की जातियों द्वारा प्रयोग किया जाता है -

1. डांगी पटेल पाटीदार-जो चंद्रवंशी -पांडुवंशी है यह मुख्य रूप से गुजरात और राजस्थान में रहते है । यह लोग मुख्य रूप से व्यापार और खेती करते है। इनकी कुलदेवी माता आंजना है।वर्ण वैश्य है।

2. डांगी राठौर (ढोली) - इस जाती के लोग मुख्य रूप से राजस्थान में रहते है। यह लोग राठौर राव डांगी के वंशज है।राठौर राव डांगी ने ढोली कन्या के साथ विवाह किया इसलिए उनके वंशज ढोली डांगी कहलाए।

3.दंडकवंशी दांगी(डांगी)

(4 प्रकार के दांगी और 3 प्रकार के डांगी पूर्णतः एक दूसरे से अलग है।)

दांगी समाज की विशेषता:

1. दांगी, उत्तरी भारत की एक कृषक जाति है. इनका पारंपरिक व्यवसाय खेती है.

2. दांगी समाज को कई नामों से जाना जाता है, जैसे कि डांगी, पाटीदार, और दांगी ठाकुर.

3. दांगी जाति मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, झारखंड, बिहार, हरियाणा और नेपाल में रहती है.

2. बिहार में दांगी क्षत्रिय जाति की एक उपजाति है.

3. दांगी समाज के लोग, सूर्यवंशी और चंद्रवंशी हैं.

4. दांगी समाज के लोग, मंडल, सिंह, प्रसाद, और दांगी जैसे उपनामों का इस्तेमाल करते हैं.

5. दांगी समाज के लोग, छुआछूत, रुढ़िवाद, अंधविश्वास, और ढोंग के ख़िलाफ़ लड़ते हैं.

6. दांगी समाज के लोग, चापलूसी और अनैतिक कामों में विश्वास नहीं रखते.

7. दांगी समाज के लोग, कर्मठता और ईमानदारी पर आधारित जीवन पद्धति को अपनाते हैं.

8. बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने दांगी समाज के लोगों को अति पिछड़ी जाति में शामिल किया है.

9. बिहार में स्वर्गीय जगदेव प्रसाद, दांगी जाति के एक बड़े नेता थे

Copyright©2024 दाँगी संस्कृतिक विकास संघ

Copyright©2024 दाँगी संस्कृतिक विकास संघ

दाँगी साँस्कृतिक विकास संघ, राँची

"दांॅगी साँस्कृतिक विकास संघ" सोसाइटी एक्ट की पंजीकरण धारा 1860 के तहत सूचीबद्ध एक समर्पित गैर-लाभकारी संगठन है, जो पूरे राँची जिला में दांॅगी समुदाय के उत्थान और सशक्तिकरण के लिए प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ रहा हैं । हमारा संगठन समुदाय के भीतर सामाजिक-आर्थिक विकास, शैक्षिक उन्नति और सांस्कृतिक संरक्षण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विभिन्न परियोजनाओं, अभियानों और पहलों में सक्रिय रूप से संलग्न है। हमारा संघठन सांस्कृतिक संरक्षण: दांगी समुदाय की समृद्ध विरासत और परंपराओं को संरक्षित करने हेतू विभिन्न कार्यक्रम एवं कार्यशालाएँ आयोजित करता रहता हैं जिसकी झांकी आप हमारे वेबसाइट पर देख सकते हैं ।

हमारी पहल:

- शैक्षिक सशक्तिकरण: समुदाय के भीतर युवाओं के उत्थान के लिए छात्रवृत्ति, शैक्षिक संसाधन और मेंटरशिप कार्यक्रम प्रदान करना।

- सामाजिक-आर्थिक विकास: आर्थिक विकास के लिए स्थायी पहल, कौशल विकास कार्यक्रम और उद्यमिता के अवसरों का समर्थन करना।

- सांस्कृतिक संरक्षण: दांगी समुदाय की समृद्ध विरासत और परंपराओं को संरक्षित और मनाने के लिए कार्यक्रम, कार्यशालाएँ और पहल आयोजित करना।

मुख्य मूल्य: अखिल भारतीय दांगी क्षत्रिय संघ में, हम ईमानदारी, समावेशिता, पारदर्शिता और समुदाय-संचालित प्रगति के सिद्धांतों का पालन करते हैं।

हमारी तत्कालीन नेतृत्व टीम:

रांची दाँगी संस्कृतिक विकास संघ के नए कार्यकारिणी के पदाधिकारियों का विवरण -

अध्यक्ष - श्री अमरेंद्र कुमार दांॅगी

महामंत्री - डॉ. धनंजय कुमार सिंह दांॅगी

कोषाध्यक्ष - श्री पवन कुमार दांॅगी

सहायक महामंत्री-

1. श्री राजन कुमार सिन्हा दांॅगी

2. श्री संतोष कुमार दांॅगी

Copyright©2024 दाँगी संस्कृतिक विकास संघ

3. श्री नरेंद्र कुमार दांॅगी

उपाध्यक्ष -

1. श्री संजय कुमार दांॅगी

2. श्री बासुदेव नारायण सिंह दांॅगी

अंकेक्षक -

श्री नरेंद्र कुमार दांॅगी

महिला समिति -

अध्यक्ष -

श्रीमती मीनू प्रसाद दांॅगी

उपाध्यक्ष -

श्रीमती नीता सिन्हा दांॅगी

आप कैसे योगदान दे सकते हैं:

- स्वयंसेवा: समुदाय पर सीधा प्रभाव डालने के लिए हमारी पहलों और कार्यक्रमों में शामिल हों।

- दान: आपका योगदान शैक्षिक छात्रवृत्ति और सामाजिक-आर्थिक परियोजनाओं का समर्थन करेगा।

अधिक जानकारी के लिए या हमारे उद्देश्य में योगदान देने के लिए, कृपया हमसे [संपर्क विवरण डालें] पर संपर्क करें या [संगठन की वेबसाइट या दान पृष्ठ] पर जाएँ।

" दाँगी साँस्कृतिक विकास संघ " में, हम दांगी समुदाय के भीतर स्थायी सकारात्मक बदलाव लाने की अपनी प्रतिबद्धता में दृढ़ हैं। साथ मिलकर, हम एक उज्जवल और अधिक एकीकृत भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

धन्यवाद् ।

Copyright©2024 दाँगी संस्कृतिक विकास संघ

Copyright©2024 दाँगी संस्कृतिक विकास संघ